G6G6Y3

वर्तमान काल के महान संगीतज्ञ

संगीत के क्षेत्र में भारत हमेशा ही सम्पूर्ण विश्व का सिरमौर रहा है। यहाँ के संगीत ने पत्थरों को पिघला दिया, बुझते दीपों को प्रज्ज्वलित कर दिया और विश्वजन को संगीत रस से सराबोर कर दिया।

यहाँ हम संगीत के क्षेत्र की ऐसी विलक्षण प्रतिभाओं के बारे में जानेंगे,जिन्होनें बीसवीं शताब्दी में भारतीय संगीत को नयी ऊँचाइयों तक पहँुचाया और विश्वसंगीत में भारत के वैशिष्ट्य को बनाए रखा।

देश प्रेम और अखण्डता की सरगम: - स्वर कोकिला लता मंगेशकर

गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड विश्व का वह महŸवपूर्ण ग्रन्थ है, जिसमंे विश्व के आश्चर्य अजूबे अंकित किये जाते हैं। क्या आप जानते हैं ? भारत की वह कौन सी गायिका है, जिसके नाम सर्वाधिक गीत गाने का रिकार्ड इस पुस्तक मंे अंकित है ? वह भारत कोकिला, स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर हैं जिन पर हम सब भारतीयों को गर्व है।

लता मंगेशकर का जन्म 28 सितम्बर 1929 को इन्दौर में हुआ। इनकी माता का नाम शुद्धमती तथा पिता का नाम पण्डित दीनानाथ मंगेशकर था। पिता श्शास्त्रीय गायक थे और थियेटर कम्पनी चलाते थे। वे ग्वालियर घराने में संगीत की शिक्षा भी देते थे। उन्होंने लता

को पाँच वर्ष की उम्र से ही संगीत की शिक्षा देना प्रारम्भ कर दिया। लता की संगीत मंे विशेष प्रतिभा देखकर वे कहा करते, ''यह लड़की एक दिन चमत्कार साबित होगी। ''

लता ने अपना प्रथम आकाशवाणी कार्यक्रम 16 दिसम्बर 1941 को प्रस्तुत किया जिसे सुनकर माता-पिता गद्गद हो गए। दुर्भाग्य से 1942 मंे दीनानाथ जी की मृत्यु हो गयी और परिवार का सम्पूर्ण दायित्व लता पर आ गया। उनके भाई हृदयनाथ और बहिनें आशा, ऊषा व मीना उस समय अत्यन्त छोटे थे। सन् 1942 से 1948 तक लता ने मराठी और हिन्दी की लगभग छः फिल्मों मंे अभिनय किया और परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारा।

लता मंगेशकर ने पहली बार मराठी फिल्म के लिए गाना गाया, जिसे सम्पादन के समय निकाल दिया गया। पहली हिन्दी फिल्म जिसके लिए उन्हांेने गीत गाया वह थी ''आपकी सेवा में'' यह फिल्म 1947 में आयी पर लता के गाने को कोई ख्याति न मिली। उस समय फिल्मी दुनिया मंे भारी-भरकम आवाज वाली गायिकाओं का युग था। दुर्भाग्यवश 1948 में आयी फिल्म शहीद मंे भी लता द्वारा गाये गीत को फिल्म निर्माता ने यह कहकर फिल्म से निकाल दिया कि उनकी आवाज बहुत महीन (पतली) है । इस फिल्म के संगीतकार गुलाम हैदर ने उस वक्त फिल्म निर्माता के सामने ही घोषणा की, ''मैं आज ही कहे दे रहा हूँ कि यह लड़की बहुत शीघ्र संगीत की दुनिया पर छा जाएगी।'' अपने इसी विश्वास के बल पर गुलाम हैदर ने लता को 'मजबूर' फिल्म में फिर से गवाया। गाना था ''दिल मेरा तोड़ा'' इस गीत की रिकार्डिंग के समय प्रख्यात संगीतकार हुस्नलाल भगतराम, अनिल विश्वास, नौशाद व खेमचन्द्र प्रकाश उपस्थित थे। लता जी की गायन श्शैली से प्रभावित होकर नौशाद व हुस्नलाल भगतराम ने उन्हें अपनी फिल्मों 'अंदाज' और 'बड़ी बहिन' में मौका दिया। फिर आई 'बरसात' जिसके गाने बहुत लोकप्रिय हुए और लता निरन्तर प्रसिद्धि पाती गई। इस प्रसिद्धि के पीछे थी उनकी कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और संगीत के प्रति समर्पण।

1949 में लता जी के स्वर से सजी चार फिल्में आयीं 'बरसात', 'अंदाज', 'दुलारी', और 'महल', इनमें महल का गीत 'आयेगा आने वाला' अत्यन्त लोकप्रिय हुआ और लता जी श्रोताओं के दिलो दिमाग पर छा गयीं। तब से आज तक वे फिल्म संगीत मंे साम्राज्ञी के पद पर विराजमान हैं।

ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा की धनी लता ने हर भाव और मनःस्थिति के अनुरूप अपने स्वर को ढाला। शास्त्रीय संगीत का उत्कृष्ट ज्ञान, शहद से भी मीठा भावरंजित स्वर जो श्रोताओं को अपने साथ एकाकार कर लेता है, उनकी बहुत बड़ी खूबी है।

इसके साथ ही जो अनुपम चमत्कार उन्हांेने कर दिखाया है, वह है अपनी राष्ट्रभाषा तथा देश की सभी प्रमुख लगभग सोलह प्रान्तीय भाषाओं मंे उतनी ही सहजता और निष्ठा से गीत, भजन और लोकगीत गाना, जितना वे अपनी मातृभाषा मराठी मंे गाती हैं। गाते समय वे शब्दों के सही उच्चारण पर विशेष ध्यान देती हैं। अपने उच्चारण में शुद्धता लाने के लिए ही उन्हांेने एक अध्यापक से उर्दू सीखी।

लता जी की प्रसिद्धि के पीछे उनकी लगन, परिश्रम व तपस्या के साथ-साथ विराट अखण्ड भारत के प्रति उनका गहरा प्रेम, निष्ठा और उसके कल्याण की भावना भी है। सन 1962 में हुई चीनी आक्रमण के बाद जब लता जी ने रुंधे कण्ठ से ''ऐ मेरे वतन के लोगों'' गाया तो सारा देश तड़प उठा। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंण्डित जवाहर लाल नेहरू की आँखें भर आयीं। लता जी ने इस गीत की पंक्ति ''जो ख्ूान गिरा सरहद पर वह खून था हिन्दुस्तानी'' को गाकर देश की एकता और अखण्डता की मशाल जलायी उससे दुःख की घड़ी में भी देशवासियों का हृदय रोशन हो उठा। आज भी यह गीत सुनकर लोगों की आँखों में आँसू आ जाते हैं।

लता जीः- कुछ रोचक बातंे:-

छः-सात वर्ष की उम्र मंे लता जी छत पर कोई धुन गुनगुना रही थीं। अचानक वे गिर गयीं और मूचर्िछत हो गयीं। चेतनावस्था में आने पर वे पुनः हँसती खिलखिलाती उसी धुन को गुनगुनाने लगीं, जिसे मूचर्िछत होने से पूर्व गुनगुना रही थीं।

Û लता जी के स्वर की मधुरता का एक रहस्य यह भी है कि वे कोल्हापुरी काली मिर्च बहुत अधिक खाती है ।

Û प्रत्येक गीत गाने से पूर्व लता जी उसे अपनी हस्तलिपि में लिखती हैं।

आश्चर्यजनक लता जी -

लता जी की इच्छा है कि अगर उनका पुनर्जन्म हो तो भारत में ही हो।

Û लता जी जिस मंच पर भी गाती हैं, हमेशा नंगे पाँव गाती हैं। ऐसा वे मंच के सम्मान मंे करती हैं।

Û लता जी तीनों सप्तक में गा सकती है जबकि अधिकंाश गायक दो ही सप्तक में गा पाते है।

Û लता जी रॉयल अल्बर्ट हॉल, लंदन में कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाली प्रथम भारतीय महिला हैं। (सन् 1974)

Û लता जी सवार्च्च भारतीय नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' प्राप्त करने वाली प्रथम पार्श्व गायिका हैं।

Û लता जी अभिनेत्रियों की तीन पीढ़ियों -मधुबाला, जीनत अमान व काजोल के लिए पार्श्वगायन कर चुकी हैं और अभी भी पार्श्वगायन में पूर्णतया सक्रिय हैं।

Û लता जी लगभग 20 भाषाओं में 50,000 से अधिक गीत गाकर विश्वरिकार्ड बना चुकी हैं जिसके लिए उनका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में अंकित हैं।

Û भारत मंे केवल दो ही व्यक्तित्व हैं जिन्हें भारत रत्न व दादा साहब फाल्के दोनांे सम्मान प्राप्त हैं- सत्यजित रे और लता मंगेशकर ।

Û लता जी को न्यूयार्क विश्वविद्यालय समेत छह विश्वविद्यालयों ने डॉक्टरेट की मानद उपाधि से विभूषित किया है।

Û रायल अल्बर्ट हॉल लन्दन ने कम्प्यूटर की सहायता से लता की आवाज का ग्राफ तैयार किया और पाया कि उनकी आवाज विश्व की सबसे आदर्श आवाज है।

Û लता मंगेशकर देश की संभवतः ऐसी एकमात्र हस्ती हैं जिनके जीवनकाल में ही उनके नाम पर 'लता मंगेशकर' पुरस्कार दिया जा रहा है। यह पुरस्कार सन 1984 से मध्यप्रदेश सरकार तथा 1992 से महाराष्ट्र सरकार द्वारा दिया जाता है।

प्रमुख सम्मान -

लता जी पिछले दशकों में विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित की जा चुकी हैं जिनमें उल्लेखनीय है - फिल्म फेअर पुरस्कार, महाराष्ट्र रत्न पुरस्कार, बंगाल फिल्म पत्रकार संगठन पुरस्कार, पद्म श्री, पद्मभूषण, पदम विभूषण, वीडियोकॉन लाइफ टाइम एचीवमेण्ट पुरस्कार, जीवन गौरव पुरस्कार, नूरजहाँ सम्मान, हाकिम खान सुर अवार्ड, स्वरभारती पुरस्कार, 250 ट्राफी ,150 गोल्डन डिस्क, प्लेटिनम डिस्क व हिन्दी सिनेमा का सर्वोच्च 'दादा साहब फाल्के' पुरस्कार तथा भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न (2001)'

लता जी: महŸवपूर्ण टिप्पणियाँ:-

विभिन्न ख्याति प्राप्त व्यक्तित्वों ने लता जी के बारे में समय-समय पर महŸवपूर्ण टिप्पणियाँ की हैं। उनमें से कुछ हैं:

राजकपूर: ''उनके कण्ठ मंे सरस्वती विराजमान हैं।''

नरगिस दत्त: ''लता जी किसी तारीफ की नहीं, पूजा के योग्य हैं।''

अभिताभ बच्चन: पड़ोसी देश के मेरे एक मित्र कहते हैं ''हमारे देश में सब कुछ है सिवाय ताजमहल और लता मंगेशकर के।''

जगजीत सिंह: बीसवीं सदी की केवल तीन चीजें याद रखी जाएंगी - लता जी का जन्म, मानव की चाँद पर विजय और बर्लिन की दीवार ढहना।

जावेद अख्तर: जिस प्रकार एक पृथ्वी है, एक सूर्य है, एक चंद्रमा है उस प्रकार एक ही लता है। निःसन्देह लता जी हम सब भारतीयों का गौरव है।

टिप्पणी:-

सप्तकः संगीत में तीन सप्तक होते है। मन्द्र सप्तक, मध्य सप्तक और तार सप्तक। विरले गायक ही इन तीनों सप्तकों में गायन कर पाते हैं।

शहनाई के जादूगरः- उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ

26 जनवरी 1950 स्वतंत्र भारत के प्रथम गणतन्त्र की संध्या पर शहनाई से राग काफी में उभरी स्वरलहरियों ने सम्पूर्ण वातावरण में जैसे सुरों की गंगा प्रवाहित कर दी है। इस दिवस का हर्षोल्लास द्विगुणित हो गया। श्रोता भाव-विभोर होकर स्वरों की इस अपूर्व बाजीगरी का आनन्द उठा रहे थे और मन ही मन प्रशंसा कर रहे थे उस कलाकार की, जो शहनाई से उभरे स्वरों के रास्ते उनके हृदयों में प्रवेश कर रहा था।

यह शहनाई वादक थे उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ जो स्वतंत्र भारत की प्रथम गणतंत्र दिवस की संध्या पर लाल किले मंे आयोजित समारोह मंे शहनाई बजा रहे थे। उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ एक ऐसा कोमल हृदय मानव जो संगीत के द्वारा आत्मा की गहराइयों में उतर जाते थे। ऐसा व्यक्तित्व जो विश्वविख्यात शहनाई वादक के रूप मे जीते जी किंवदन्ती बन गए।

बिस्मिल्लाह खाँ का जन्म 21 मार्च 1916 को डुमराँव (बिहार) में हुआ। इनके पूर्वज डुमराँव रियासत में दरबारी संगीतज्ञ थे। इन्हें संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा चाचा अलीबक्श विलायत से मिली। अलीबक्श वाराणसी के विश्वनाथ मन्दिर में शहनाई बजाते थे। चाचा की शिक्षा से जहाँ उनमें संगीत के प्रति गहरी समझ विकसित हुई वहीं सभी धर्मो के प्रति आदर का भाव

भी जाग्रत हुआ। उन्हांेने अपना जीवन संगीत को समर्पित कर दिया और शहनाई वादन को विश्वस्तर पर नित नयी ऊँचाइयाँ देने का निश्चय कर लिया ।

बिस्मिल्लाह खाँ संगीत और पूजा को एक ही दृष्टि से देखते थे। उनका मानना था कि संगीत, सुर और पूजा एक ही चीज है। बिस्मिल्लाह खाँ ने अपनी शहनाई की गूँज से अफगानिस्तान, यूरोप, ईरान, इराक, कनाडा, अफ्रीका, रूस, अमेरिका, जापान , हांगकांग समेत विश्व के सभी प्रमुख देशों के श्रोताओं को रसमग्न किया। उनका संगीत समुद्र की तरह विराट है लेकिन वे विनम्रतापूर्वक कहते थे। ‘‘मैं अभी मुश्किल से इसके किनारे तक ही पहँुच पाया हूँ मेरी खोज अभी जारी है।’’

संगीत में अतुलनीय योगदान हेतु उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ को देश-विदेश में विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें भारत का सवार्च्च नागरिक सम्मान ‘भारत रत्न’ महामहिम राष्ट्रपति द्वारा सन् 2001 में प्रदान किया गया। संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, तानसेन पुरस्कार, मध्य प्रदेश राज्य पुरस्कार, ‘पद्म विभूषण’ जैसे सम्मान एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा उन्हें प्रदान की गयी डॉक्टरेट की उपाधियाँ उनकी ख्याति की परिचायक हैं।

खाँ साहब अत्यन्त विनम्र, मिलनसार और उदार व्यक्तित्व के धनी थे। वे सभी धर्मो का सम्मान करते थे। संगीत के प्रति पूर्णतः समर्पण, कड़ी मेहनत, घंटों अभ्यास, संतुलित आहार, संयमित जीवन और देश प्रेम के अटूट भाव एवं गुणों ने उन्हें विश्वस्तर पर ख्याति दी। अभिमान तो जैसे उन्हें छू तक नहीं गया। उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ शास्त्रीय संगीत परम्परा की ऐसी महŸवपूर्ण कड़ी थे जिन पर प्रत्येक देशवासी को गर्व है। इनका देहावसान 21 अगस्त, 2006 को हुआ था।

अभ्यास-प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नांे के उत्तर दीजिए-

1. भारत की किस गायिका का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में अंकित किया गया है ? उनका नाम इस पुस्तक में क्यों अंकित किया गया है ?

2. पण्डित जवाहर लाल नेहरू की आँखों से आँसू निकल आए-

क. आँख में कुछ गिर जाने के कारण। ख. बीमारी के कारण।

ग. बहुत अधिक प्रसन्नता के कारण।

घ. लता मंगेशकर द्वारा शहीदों की स्मृति मंे गाये गीत को सुनकर।

3. लता को निम्नलिखित सम्मानों मंे से कौन सा सम्मान प्राप्त नहीं हुआ है-

क. पदम विभूषण ख. दादा साहब फाल्के पुरस्कार

ग. नोबेल पुरस्कार घ. भारत रत्न

4. भारत के प्रथम गणतन्त्र दिवस की संध्या पर लाल किले के मंच से श्शहनाई वादन करने वाले व्यक्ति थे।

क. उस्ताद अली अकबर विलायत साहब ख. उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ साहब

ग. उस्ताद जाकिर हुसैन साहब घ. उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ साहब

5. वे कौन से गुण हैं जो उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ को विशिष्ट बनाते हैं ?

निम्नलिखित महापुरुषों के चित्र के नीचे उनके नाम लिखिए।

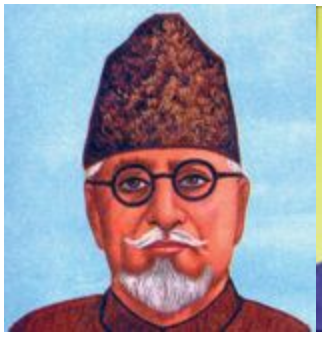

6. जानें:

अपने बड़ों से बीसवीं सदी के अन्य महान संगीतज्ञों के बारे में।

अपने गाँव/तहसील/जनपद के प्रमुख संगीतज्ञों के बारे में।